Unit - (III) (d) 2 (c) ①

शिक्षा शास्त्र या शास्त्र

विभिन्न स्तरों पर पर्यावरणीय शिक्षा की शिक्षण शास्त्र से आप क्या समझते है? व्याख्या कीजिए।

What do you understand/Mean by the pedagogy of environmental Education at different levels? Explain.

Introduction → शिक्षण कार्य की प्रक्रिया का विधिवत/व्यवस्थित अध्ययन शिक्षाशास्त्र/शिक्षणशास्त्र (Pedagogy) कहलाता है इसमे अध्यापन (Teachings) की शैली या नीतियो का अध्ययन किया जाता है। शिक्षणशास्त्र द्वारा कक्षाओ मे गतिविधियो और शिक्षा का प्रबंध कैसे करना है, प्रत्येक छात्र के सीखने की क्षमता को अनुकूलित करने वाले पाठ्यक्रमो को सुविधाजनक बनाने के लिए शिक्षकों को सशक्त बनाना है। शिक्षक यदि अध्यापन कार्य करता है तो वह इस बात का ध्यान रखता है कि अधिगमकर्ता को अधिक से अधिक रचनात्मक, सौन्दर्यात्मक तथा आलोचनात्मक समझ बनाये। और बच्चों को अतीत तथा वर्तमान के बीच सम्बन्ध बनाने एवं समाज मे होने वाले परिवर्तनो को समझने मे सक्षम करें।

विभिन्न स्तरो पर विभिन्न विधियो का सहारा लेकर पर्यावरण शिक्षा प्रदान की जाती है ताकि/जिससे विद्यार्थियो में पर्यावरणीय शिक्षा के माध्यम से जागरूकता का विकास किया जा सके। शिक्षण मे प्रस्तुतीकरण पर बल दिया जाता है जिसके लिए शिक्षण विधियो (method) एवं प्रविधियो/आव्यूह (Strategy) का उपयोग किया जाता है।

"शिक्षण वह प्रक्रिया है जिसके प्रारूप तथा परिचालन की व्यवस्था इसलिए की जाती है जिससे छात्रो के व्यवहार अपेक्षित परिवर्तन लाया जा सके।

इस प्रकार से कहा जा सकता है कि शिक्षण का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियो के व्यवहार मे परिवर्तन लाना है इसके लिए शिक्षण की आव्यूह उपयोग किया जाता है। शिक्षण आव्यूह की रचना शिक्षण के प्रस्तुतीकरण के पूर्व ही तैयार की जाती है किन्तु प्रस्तुतिकरण के समय अनुभव के आधार पर भावी शिक्षण आव्यूह के लिए जो उपयुक्त परिवर्तन करना चाहे शिक्षक कर सकते है

Scanned by CamScanner

शिक्षण विधि एवं शिक्षण आव्यूह के निर्धारण के आधार — Base of determination of Teaching Method and Teaching strategy) →

इसके प्रमुख आधार निम्न है —

(A) शिक्षण विधि — (Teaching Method) — शिक्षण विधि का निर्धारण पाठ्यवस्तु की प्रकृति के अनुसार किया जाता है प्रस्तुतीकरण के मुख्यतः तीन तरीके होते है। अतः शिक्षण पद्धति / विधि भी उप्रकार की होती है —

(I) कथन विधियाँ — (Statement method) व्याख्यान विधि, प्रश्नोत्तर विधि आदि

(II) दृश्य - विधियाँ (Showing method) — प्रदर्शन विधि, निरीक्षण विधि आदि।

(III) कार्य विधियाँ (~~Project~~ Doing method) — प्रोजेक्ट विधि, प्रयोग विधि आदि।

(B) शिक्षण आव्यूह (Teaching Strategy) — शिक्षण विधि मे जहाँ पाठ्यवस्तु एवं प्रस्तुतीकरण का का प्रमुख होता है वही शिक्षण आव्यूह का चयन शिक्षण उद्देश्यो के आधार पर किया जाता है शिक्षण आव्यूह पाठ-योजना का सामान्यीकृत रूप होता है जिसमे अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन की संरचना अनुदेशन (Instruction) के उद्देश्यो के रूप मे सम्मिलित होती है आव्यूह रूपरेखा को प्रयुक्त करने के लिए युक्तियो (Tactics) की भी योजना तैयार की जाती है पाठयोजना की आव्यूह वृहत पाठ्यक्रम का ही अंग मानी जाती है।

शिक्षण आव्यूह के विकास के लिए जो भी क्रियाये शिक्षक द्वारा की जाती है उन्हे शिक्षण युक्तियाँ (Teaching Tactics) कहा जाता है जैसे —

(I) अपेक्षित क्रियाओ के लिए उद्दीपन दिया जाना,
(II) सही अनुक्रिया के लिए पुनर्बलन देना।
(III) सीखी हुई पाठ्यवस्तु का अभ्यास करवाना।
(IV) उदाहरणो, नियमो तथा अन्य तथ्यो का शिक्षण मे प्रयोग करना

नोट — इसका विस्तार शाब्दिक (Verbal) व्यवहार से लेकर अशाब्दिक (Non-Verbal) तक होता है —

Scanned by CamScanner

शिक्षण प्रवृति / विधि एवं शिक्षण आव्यूह / व्यूह मे अन्तर (Difference between Teaching method and teaching strategy) – इनमे प्रमुख अन्तर निम्नलिखित है –

शिक्षण विधि	शिक्षण आव्यूह
(I) इसमे कार्य तथा प्रस्तुतीकरण को महत्व दिया जाता है	(I) इसमे व्यवहार एवं सम्बधो को महत्व दिया जाता है
(II) इसमे सम्पूर्ण आयाम (Macro Approach) को अपनाया जाता है।	(II) इसमे सूक्ष्म आयाम (Micro Approach) को अपनाया जाता है।
(III) इसमे शिक्षण को एक कला माना जाता है।	(III) इसमे शिक्षण को विज्ञान माना जाता है।
(IV) इसके मूल्यांकन का मानदंड ~~[illegible]~~ पाठ्यवस्तु होती है।	(IV) इसके मूल्यांकन का आधार उद्देश्य की प्राप्ती होती है।
(V) इसका लक्ष्य प्रभावशाली प्रस्तुती है	(V) ~~यह आधुनिक मानव व्यवस्था~~ इसका लक्ष्य उचित अधिगम परिस्थितियो का निर्माण करना है।
(VI) यह परम्परागत मानव व्यवस्था सिद्धान्त पर आधारित है।	(VI) यह आधुनिक मानव व्यवस्था सिद्धान्त पर आधारित है।

सामान्यत: जब हम किसी प्रकरण (Topic) को पढाने के लिए किसी व्यावहारिक कौशल का प्रयोग करते है तब यह क्रिया प्रविधि अथवा तकनीकी कहलाती है। अवलोकन एक विधि है और साक्षात्कार एक प्रविधि है। क्योंकी साक्षात्कार मे अवलोकन के साथ-साथ व्यक्ती से संपर्क भी किया जाता है।

विभिन्न स्तरो पर पर्यावरणीय शिक्षा का शिक्षण शास्त्र (Pedagogy of environment education at different levels) →

(I) प्राथमिक स्तर (I to V) – (Primary Level) – इस स्तर पर बालको मे निरीक्षण विधि, खेल विधि, शैक्षिक पर्यटन विधि, नाटक विधि, योजना विधि आदि के द्वारा बच्चो मे पर्यावरण के प्रति चेतना का विकास किया जाता है जिसका सम्बध भावात्मक पक्ष के विकास से होता है। इस क्रम मे

बच्चो को न सिर्फ पर्यावरण से सम्बन्धित विभिन्न जैविक एवं अजैविक घटको के बारे मे जानकारी प्रदान की जाती है बल्कि उनके संरक्षण के लिए उन्हे प्रेरित किया जाता है जैसे -विभिन्न प्रकार की फूल-पत्तियो, फलो एवं पेड़-पौधो की जानकारी, पालतू जानवरो एवं जंगली जानवरो के नामो की जानकारी, जलीय-जीव एवं जलीय पौधो इत्यादि के नामो से उन्हे परिचित कराया जाता है।

(IV से X)

(II) माध्यमिक स्तर पर — इस स्तर पर व्याख्या विधि, योजना विधि, प्रश्नोत्तर विधि शैक्षिक पर्यटन विधि, नाटक विधि आदि के माध्यम से विद्यार्थियो को पर्यावरण के विभिन्न घटको के आपसी सामन्जस्य के बारे मे सही जानकारी देकर उन्हे पर्यावरण के संरक्षण एवं विकास के लिए प्रेरित किया जा सकता है। जीवन से सम्बन्धित विभिन्न पर्यावरणीय समस्याओ को समझना तथा कौशल विकास के लिए प्रयासरत होना इस अवस्था की मुख्य पहचान है प्रयोगात्मक गतिविधियो को क्षेत्रीय कार्यो के माध्यम से करवाने का प्रयास किया जाता है जिससे छात्रो मे सकारात्मक अभिवृत्तियो का विकास हो सके।

(III) उच्चतर माध्यमिक स्तर (X से XII) → इस स्तर पर व्याख्यान विधि, वाद-विवाद विधि सर्वेक्षण विधि, प्रयोगात्मक विधि, क्रियात्मक अनुसंधान विधि आदि के माध्यम से छात्रो को विषय से सम्बन्धित कुछ जटिल तथ्यो का ज्ञान कराया जाता है क्योंकि इस स्तर पर विद्यार्थियो की समझ का स्तर बढ जाता है और वह अपने स्वयं के काम धाम के अतिरिक्त अन्य कार्यो मे भी रुचि लेने लगते है अतः इस स्तर पर बढ़ती जनसंख्या के दुष्परिणाम, खाद्यान्न की कमी, विभिन्न प्रकार के प्रदूषण, भूमि क्षरण, वन्य जीव संरक्षण आदि विषयो से विद्यार्थियो को परिचित कराया जाये।

(IV) उच्च शिक्षा स्तर (महाविद्यालय) – इस स्तर पर सेमिनार कार्यशाला विधि, व्याख्यान विधि, सर्वेक्षण विधि, प्रयोगात्मक विधि, शैक्षिक पर्यटन विधि आदि के द्वारा पर्यावरण की विषयवस्तु, उसका तथ्यात्मक विश्लेषण, देश की वास्तविक स्थिति, लोगो द्वारा पर्यावरण के प्रति उपेक्षापूर्ण रवैया, विभिन्न प्रकार के प्रदूषण और उनसे होने वाली हानियाँ, वन एवं वन्य जीवों का संरक्षण, पर्यावरण प्रबन्धन आदि के बारे मे छात्रों मे उत्तरदायित्व व विश्वास की भावना का विकास करना।

निष्कर्ष → इस प्रकार स्पष्ट है कि शिक्षण शास्त्र किसी भी विषय को पढाने की शैलियो व नीतियो का ज्ञान प्रदान करता है हम विभिन्न स्तरो पर इन्ही शैलियो एवं नीतियो द्वारा छात्रो मे पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं इसके प्रति सकारात्मक भाव विकसित कर सकते है

Scanned by CamScanner

Question - 1. पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति संवेदनशील बनाने में शिक्षक की ~~किन्हीं पाँच~~ भूमिकाओं का वर्णन करें।

Ans → Introduction → बढ़ती जनसंख्या, प्राकृतिक संसाधनों के दुरुपयोग, पर्यावरण विघटन, जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण प्रदूषण, आदि कुछ ऐसे पर्यावरणीय मुद्दे है जिनकी वजह से आज हम मनुष्य विनाश के कगार पर खड़े है और अगर हम अभी जागरुक नहीं हुए, संवेदनशील नहीं हुए तो वो दिन दूर नहीं, जब हमे प्रलय का सामना करना पड़ेगा। और हम अपने अस्तित्व को सुरक्षित रखने मे नाकाम हो जायेंगे। हम अपनी तथा अपनी भावी पीढ़ी को सुरक्षित करने मे तभी कामयाब हो सकते है जब प्रत्येक नागरिक पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए प्रयत्नशील हो।

कुछ महत्वपूर्ण पर्यावरणीय मुद्दे जिनके प्रति लोगो को संवेदनशील बनाया जा सकता है इस प्रकार है।

(I) जनसंख्या विस्फोट और उससे उत्पन्न होने वाली समस्यायें
(II) प्रदूषण एवं इनके विभिन्न प्रकार
(III) जलवायु परिवर्तन
(IV) प्राकृतिक आपदा जैसे - अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकम्प आदि
(V) जल संकट, उर्जा संकट आदि
(VI) जैविक विविधता मे निरन्तर हो रही कमी।
(VII) पर्यावरण का गिरता स्तर
(VIII) आतंकवाद, हत्या, चोरी, लूटपाट।
(IX) मानव मूल्यों मे गिरावट
(X) भ्रष्टाचार एवं रिश्वतखोरी
(XI) नैतिकता मे कमी
(XII) अपशिष्ट निस्तारण की समस्या
(XIII) स्वच्छता का अभाव
(XIV) संवेदनाओं की कमी
(XV) पर्यावरण का हमारे स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव

Scanned by CamScanner

शिक्षक की भूमिका → चूंकि संवेदना ज्ञान की प्रथम सीढ़ी कहलाती है इसलिए बालक के शिक्षा की शुरुआत ही संवेदना से होता है संवेदना एक एक ऐसी विशेषता है जिसके माध्यम से किसी भी वस्तु की सत्ता का अभ्यास होता है संवेदना का शिक्षा मे महत्वपूर्ण स्थान है इस बात की जानकारी प्रत्येक शिक्षक को होनी चाहिए। तभी वह विद्यार्थी को अपने आस-पास के पर्यावरण के बारे मे जानकारी दे सकता है शिक्षक पर्यावरण की आवश्यकता और महत्ता को जानते हुए छोटी सी छोटी जानकारी विद्यार्थियो के समक्ष प्रस्तुत कर सकता है। कुछ ऐसी ही भूमिकाएं इस प्रकार है जिनके द्वारा शिक्षक विभिन्न प्रकार के पर्यावरणीय मुद्दो के प्रति विद्यार्थियो को संवेदशील बना सकता है—

(I) पर्यावरण के जैविक एवं अजैविक घटको की रक्षा करना एवं उनका महत्व समझाना। विद्यार्थियो को जैविक एव अजैविक घटको के विभिन्न प्रकारो के बारे मे बताना।

(II) इसकी शुरुआत घर के अलावा विद्यालय से भी करवाया जा सकता है और इसमे शिक्षको की भूमिका महत्वपूर्ण है कक्षा के जैविक घटक है वहां उपस्थित सभी सहपाठी और शिक्षक। इस सम्बन्ध मे शिक्षक की हमेशा कोशिश होनी चाहिए कि सभी सहपाठी एक दूसरे का सहयोग करे तथा कक्षा मे भाई-चारे का वातावरण हो।

(III) शिक्षक कक्षा के बाहर खेल के मैदान व अन्य क्रियाओ मे भी स्वस्थ वातावरण बनाये रखने मे अपनी भूमिका का निर्वाह करे। खेल के मैदान मे भी विद्यार्थियो द्वारा कोई ऐसी गतिविधि न की जाये जिससे पर्यावरण के जैविक एव अजैविक घटको को हानि पहुंचे।

(IV) शिक्षक बाग-बगीचे के पेड़-पौधे तथा फूल पत्तियो के संरक्षण संरक्षण के लिए विद्यार्थियो को प्रोत्साहित करे। इसके लिए वह विद्यार्थियो से पेड़-पौधे लगवाने के लिए विभिन्न कार्यक्रमो का आयोजन कर सकता है जैसे वाद-विवाद सेमिनार आदि।

Scanned by CamScanner

(v) वर्षा के मौसम मे वृक्षारोपण एवं पौधारोपण का कार्य करवाये। तथा प्रत्येक बच्चे को ये जिम्मेदारी सौंपे कि उन्हें समय-समय पर पौधो को सींचना है तथा निराई-गुड़ाई भी करना है यह काम प्रत्येक बच्चे से पढ़ाई के अलावा अतिरिक्त समय मे करने के लिए प्रेरित करे।

(vi) अपने आस-पास पाये जाने वाले पशु-पक्षी के बारे मे जानकारी दे और गर्मी के मौसम मे उनके लिए पानी और अन्य सुविधाये प्रदान करने के लिए प्रेरित करे।

(vi) विभिन्न प्रकार की गतिविधियो के माध्यम से जो बच्चो की उम्र के अनुकूल हो पाठ्य सहगामी क्रियाओ का आयोजन करे।

(vii) कुत्ते बिल्ली या अन्य जानवरो को परेशान न करे, बल्कि घायल पशु-पक्षी के लिए कुछ समय देने एवं उनकी सेवा के लिए प्रोत्साहित करे।

(viii) पानी, वायु और मृदा जो हमारे जीवन के लिए बहुत उपयोगी है उन्हे प्रदूषण रहित बनाने के लिए बच्चो को प्रेरित करे।

(IX) बहुत सारी पर्यावरणीय समस्याये है उसका हल क्या है? सभी को पता है जैसे पानी व्यर्थ न बहाना, जल स्रोतो मे कुछ प्रवाहित नहीं करना, पटाखे न जलाना, वनस्पतियो को नुकसान न पहुँचाना, तथा पालिथिन काम मे न लेना सबको पता है किन्तु सभी ऐसा काम नहीं करते है इस संदर्भ मे शिक्षक की यह भूमिका है कि वह छात्रो को प्रेरित करे कि हमे ऐसा नहीं करना चाहिए।

(X) आस-पास मे सफाई पर ध्यान देना, गन्दगी से उत्पन्न समस्याओ के बारे मे लोगो को बताना तथा अपने जीवन मे मानवीय मूल्यो को ध्यान देना।

निष्कर्ष → इस प्रकार स्पष्ट है कि शिक्षक आस-पास घटित घटनाओ तथा उससे उत्पन्न समस्याओ को श्रव्य-दृश्य सामग्री की सहायता से समझाकर, दिखाकर एवं कुछ गतिविधियो को करवाकर, विद्यार्थियो को अपने पर्यावरण एवं पर्यावरणीय मुद्दो के प्रति संवेदनशील बना सकता है।

Scanned by CamScanner

Question - इको क्लब से आप क्या समझते है? इको-क्लब निर्माण मे शिक्षको की भूमिका का वर्णन करे।
What do you understand by Eco-club? Describe the role of teacher in building in Eco club.

Ans - Introduction → इको क्लब विद्यार्थियो एव अध्यापको के सहयोग से गठित एक अनौपचारिक एवं स्वैच्छिक संगठन है जहाँ पर्यावरण से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के चार्ट, चित्र, मॉडल, एवं अन्य उपकरणो का संग्रहण किया जाता है यह एक पाठ्य सहगामी क्रिया-कलाप है जिसके माध्यम से विद्यार्थियो को पर्यावरण सम्बन्धी विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण प्रदान किये जाते है इसकी स्थापना प्राथमिक स्तर से लेकर विश्व-विद्यालय स्तर तक किया जा सकता है

पर्यावरण, पारिस्थितिकी सन्तुलन, जनसंख्या वृद्धि, विभिन्न प्रकार के प्रदूषण एव उनसे उत्पन्न समस्याऐ, स्थानीय एव वैश्विक स्तर पर होने वाली गतिविधियाँ, जो प्रत्यक्ष एव अप्रत्यक्ष रूप से पर्यावरण सन्तुलन पर विपरित प्रभाव डालती है, से सम्बन्धित विभिन्न तथ्यों की चित्रमय प्रस्तुती यहाँ पर की जा सकती है

पर्यावरण के विभिन्न घटको को विघटन, जल वायु, भूमि एव भौतिक प्रदूषण से समाज मे आये परिवर्तन को क्रमबद्ध तथा विभिन्न प्रकार की दृश्य - श्रव्य सामग्रियो की सहायता से दर्शाया जा सकता है विभिन्न प्रकार की चर्चाऐ, वाद-विवाद, कविता, कहानी एवं नाटक के माध्यम से पर्यावरण एव पारिस्थितिकी के संदर्भ मे जानकारी प्रदान कर विद्यार्थियो मे पर्यावरणीय चेतना का विकास किया जा सकता है

इस क्लब के माध्यम से विषय विशेषज्ञो के भाषण एव समय-समय पर स्थानीय, राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर घटने वाली घटनाओ पर चर्चाऐ आयोजित करने से संस्था के सभी सदस्यो को लाभ पहुँचता है शिक्षण संस्थाओ मे स्थापित इको क्लब के माध्यम से पूरे शिक्षण सत्र मे विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमो का आयोजन किया जा सकता है जिससे विद्यार्थी, अभिभावक, अध्यापक एवं समाज के सभी नागरिको

को आमन्त्रित कर उन्हे भी इस बात के लिए प्रेरित किया जाये कि वे पर्यावरण संरक्षण हेतु अपनी सहभागिकता सुनिश्चित करे

इको क्लब का मुख्य लक्ष्य है प्रकृति के बारे सम्पूर्ण जानकारी प्रदान करना। विभिन्न गतिविधियो के माध्यम से विद्यार्थियो एवं जन समूह को पर्यावरण सन्तुलन एवं संरक्षण ~~हेतु अपनी सहभागिता सुनिश्चित करे~~ का अवबोध कराना। ऐसी क्रियाये जिनसे पर्यावरण प्रदूषण फैलता है उनकी वैज्ञानिक जानकारी प्रदान करना।

इको - क्लब निर्माण मे शिक्षको की भूमिका →

Role of teacher in making Eco-club →

चूंकि इको-क्लब एक अनौपचारिक एवं स्वैच्छिक संगठन है जहां विद्यार्थी एवं शिक्षक पर्यावरण से सम्बन्धित सभी गतिविधियो का संचालन करते है पाठ्य सहगामी क्रियाओ के रूप मे इसके निर्माण मे शिक्षको की भूमिका महत्वपूर्ण है शिक्षको की भूमिकाओ के मुख्य बिन्दु इस प्रकार है—

(I) शिक्षक अपने विद्यार्थियो को प्रेरित करते है कि विभिन्न प्रकार के मॉडल, चार्ट और चित्र इत्यादि का निर्माण कर पर्यावरण क्लब मे उसे संग्रहित करे। ताकि न सिर्फ विद्यार्थियो को बल्कि प्रदर्शनी के माध्यम से विभिन्न उम्र एवं स्तर के लोगो को पर्यावरण के बारे जानकारी प्रदान की जा सकेगी।

(II) पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी से सम्बन्धित बातो को जन सामान्य तक पहुंचाने मे शिक्षक विद्यार्थियो के साथ विभिन्न प्रकार की क्रियाकलाप जैसे - विभिन्न प्रकार की पर्यावरणीय ~~विभिन्न~~ चर्चाओ, विषय-विशेषज्ञो के भाषण, लेख प्रतियोगिता, कार्टून एवं चित्र प्रतियोगिता, प्रभातफेरी आदि के द्वारा पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास के लिए प्रेरित कर सकते।

(III) शिक्षक पर्यावरण-क्लब के निर्माण के दौरान विद्यार्थियो को इस बात के लिए प्रेरित करे वे विभिन्न के प्रदूषणो से प्रभावित होने वाले जीव-जन्तुओ, पशु-पक्षियो एवं मनुष्यो का चार्ट तैयार करवाये। उसमे इस बात को अवश्य रेखांकित करे कि हम मनुष्य सहित अन्य जीव-जन्तुओ एवं वनस्पतियो वनस्पतियो को उससे क्या-क्या नुकसान हो रहा है।

Scanned by CamScanner

(IV) शिक्षक विद्यार्थियो को इस बात के लिए भी प्रेरित कर सकते है कि पिछले २० वर्षो मे तापक्रम एव वर्षा की मात्रा का तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत कर उसे चित्र एव चार्ट के माध्यम से प्रदर्शित करे।

(V) वनो की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन कर वर्तमान मे उसकी स्थिति का एक समीक्षात्मक चार्ट बनाकर घटते जंगल से उपजी प्राकृतिक विसंगतियो की चित्रमयी प्रस्तुती विद्यार्थियो द्वारा तैयार करने मे शिक्षको की महत्वपूर्ण भूमिका है।

(VI) स्थानीय, राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर घटने वाली घटनाओ को सूचीबद्ध करवा कर, उस घटना का कारण एव निवारण के लिए किये जाने वाले प्रयासो का वर्णन विद्यार्थियो द्वारा करवाकर, उसे इको-क्लब (पर्यावरण क्लब) मे संग्रहित किया जा सकता है

(VII) विभिन्न प्रकार के मॉडल, कर कारखाने, बाँध, जल विद्युत परियोजनाओ, उर्जा के वैकल्पिक साधन, वृक्षारोपण, मृदा संरक्षण, नैतिकता से सम्बन्धित विभिन्न तथ्य, विभिन्न प्रकार के पर्यावरणीय मूल्य, हमारी सभ्यता एव संस्कृति से कई बातो को मूर्त रूप प्रदान करने के लिए विद्यार्थियो को प्रेरित कर सकते है

(VIII) पर्यावरण क्लब मे हरियाली की महत्ता, विभिन्न प्रकार के पोस्टर अथवा चित्र के माध्यम से विद्यार्थियो को पर्यावरण संरक्षित करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है

(IX) शिक्षक न सिर्फ पाठ्य सहगामी क्रियाओ द्वारा बच्चो मे पर्यावरण का बोध करवा सकते है बल्कि उन्हे इस बात की भी जानकारी दे सकते है कि जीने के लिए जितना जल, वायु, भोजन एव घर जरुरी है उतना ही जरुरी स्वच्छ पर्यावरण भी है।

<u>निष्कर्ष (Conclusion)</u> – इस प्रकार स्पष्ट है कि इको-क्लब एक ऐसा अनौपचारिक एव शैक्षिक संगठन है जहाँ पर्यावरण से सम्बन्धित चित्र, चार्ट, मॉडल एव अन्य उपकरणो ~~विद्यमान रहते~~ है का संग्रहण किया जाता है इको क्लब के निर्माण मे शिक्षको की भूमिका महत्वपूर्ण है वह विभिन्न प्रकार गतिविधियो एव पाठ्य सहगामी क्रियाओ के माध्यम से इको क्लब बनाने मे विद्यार्थियो को प्रेरित कर सकता है

Question → क्षेत्र भ्रमण एवं अवलोकन में शिक्षकों की भूमिका पर प्रकाश डाले।
(Throw light on role of teacher in Field Trips and observation.)

Ans → Introduction → पर्यावरणीय शिक्षा एक ऐसी शिक्षा है जिसे बन्द कक्षा मे देना सम्भव नहीं है क्योंकि प्रकृति के सम्पूर्ण तथ्यो एवं सिद्धान्तो को मात्र पुस्तकीय ज्ञान से प्राप्त करना असम्भव है इसके लिए जरूरी है कि छात्रो को शैक्षिक भ्रमण पर ले जाया जाये। क्षेत्र पर्यटन के माध्यम से विद्यार्थियो को पर्यावरण से सम्बन्धित प्रत्यक्ष ज्ञान एवं अनुभव अवलोकन द्वारा प्राप्त होता है

सूक्ष्म निरीक्षण करने से जहाँ उनकी मानसिक शक्ति का विकास होता है वहीं वे प्रकृति के कई रहस्यों पर चिंतन करने के लिए मजबूर हो जाते है। क्षेत्र भ्रमण एवं अवलोकन करने से विद्यार्थियों की जिज्ञासा और अन्वेषणात्मक प्रवृत्तियों को पूर्णतः संतुष्ट किया जा सकता है उनमे वैज्ञानिक दृष्टिकोणों का विकास किया जा सकता है और उनमे सक्रियता और प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता का भी विकास किया जा सकता है।

पर्यावरण शिक्षा के कुछ प्रकरणो का ज्ञान भ्रमण यानि क्षेत्र पर्यटन विधि के द्वारा दिया जाना सम्भव है। मनोवैज्ञानिक पेस्टालॉजी का भी यही कहना था कि पुस्तकों द्वारा प्राप्त ज्ञान की अपेक्षा भ्रमण द्वारा प्राप्त किये गये ज्ञान का अधिक महत्व है रूसो ने भी इसी बात का समर्थन किया और कहा कि पुस्तकें पढ़कर ज्ञान प्राप्त करने की अपेक्षा प्रकृति निरीक्षण द्वारा जो ज्ञान प्राप्त किया जाता है वह उत्तम तथा श्रेष्ठ होता है।

अतः भ्रमण एवं अवलोकन करने के लिए जरूरी है कि शिक्षक इसके लिए एक ऐसे स्थान का चयन करे जहाँ, वैज्ञानिक तथ्यो, सिद्धान्तो, घटनाओं, कार्य और कारणो आदि

Scanned by CamScanner

का प्रत्यक्ष ~~स्वाध्य~~ निरीक्षण और अध्ययन करना आसान है। क्षेत पर्यटन एवं अवलोकन के माध्यम से विद्यार्थियो के ज्ञानात्मक तथा भावात्मक पक्षो का विकास किया जाता है अत: शिक्षको क्षेत पर्यटन एव अवलोकन के दौरान निम्न बातो का ध्यान रखना चाहिए।

(I) शिक्षक द्वारा क्षेत पर्यटन एव अवलोकन के पूर्व उचित उचित स्थानो का चयन कर लेना चाहिए। यह स्थान विषय से सम्बन्धित होने चाहिए। तथा ये विद्यार्थियो की जिज्ञासाओ एवं खोजपूर्ण कार्यो के लिए उपयुक्त होने चाहिए जिससे विद्यार्थियो को पर्याप्त संतुष्टि मिल सके।

(II) पर्यटन व अवलोकन के दौरान शिक्षको को विद्यार्थियो पर पूरी नजर रखनी चाहिए। नदी, पहाड़, जंगल, झील, औद्योगिक इकाईयाँ, पुस्तकालयो आदि पूर्व निर्धारित उद्देश्यो के अनुसार भ्रमण करते हुए उनकी सुरक्षा का भी ध्यान रखना चाहिए।

(III) शिक्षक को इस बात की निगरानी रखनी चाहिए कि जिन उद्देश्यो को लेकर भ्रमण अथवा अवलोकन की योजना तैयार गई है उसकी पूर्ति आवश्यक रूप से हो रही है या नही। यदि नही हो रही है तो शिक्षक को अपनी योजना मे बदलाव करना चाहिए।

(IV) विद्यार्थियो को प्रत्येक बातो की जानकारी प्रदान करना, शिक्षक का मुख्य लक्ष्य होना चाहिए। यदि औद्योगिक इकाई का चयन किया गया है उससे सम्बन्धित विषयवस्तु को जीवन का महत्वपूर्ण अंग बनाये। जिससे पर्यावरण की गुणवत्ता बनी रहे।

(V) अवलोकन एव क्षेत पर्यटन से पूर्व विद्यार्थियो के संरक्षको एवं अभिभावको से अनुमति ले लेनी चाहिए। बिना अनुमति के विद्यार्थियो को क्षेत पर्यटन एव अवलोकन के लिए पर नही ले जाना चाहिए।

(VI) शैक्षिक भ्रमण एवं अवलोकन का दिन व समय पहले ही निर्धारित कर लेना चाहिए। समय एव तिथि का निर्धारण होने से विद्यार्थी मानसिक रूप से अवलोकन

Scanned by CamScanner

एवं क्षेत्र पर्यटन के लिए मानसिक रूप से तैयार रहते है तथा उनके भ्रमण की योजना भी सार्थक रूप सफल होती है

(VII) शिक्षक द्वारा शैक्षिक भ्रमण तथा अवलोकन से पूर्व खाने-पीने की चीजो की व्यवस्था कर लेनी चाहिए। शिक्षक द्वारा प्रत्येक छात्रो को यह निर्देश दिया जाना चाहिए कि वह खाने-पीने की आवश्यक वस्तुएं अपने पास रख ले।

(VIII) भ्रमण एवं अवलोकन स्थल पर ठहरने हेतु उचित व्यवस्था पहले ही पत्र व्यवहार, टेलीफोन या E-mail द्वारा कर लेना चाहिए। अन्यथा भ्रमण स्थल पर तत्काल रहने के पर्याप्त मात्र मे विश्रामालय कठिन हो सकता है।

(IX) विद्यार्थियो का समूह मे बाँटकर प्रत्येक समूह का एक निर्देशक निर्धारित कर देना चाहिए। यह निर्देशक अपने-अपने समूह पर नियन्त्रण एवं उनकी अति आवश्यक जरूरतो को पूरा करने मे सक्षम भी होना चाहिए।

(X) शैक्षिक भ्रमण एवं अवलोकन के दौरान शिक्षक को इस बात का विशेष रूप ध्यान रखना चाहिए कि विद्यार्थियो की विद्यार्थियो की प्रत्येक जिज्ञासा का समाधान यथासम्भव कर देना चाहिए।

(XI) बीच-बीच मे खाने पीने तथा मनोरंजन का भी ध्यान रखना चाहिए। इससे विद्यार्थियो उत्साह एवं उर्जा का संचार होता है जो अवलोकन एवं भ्रमण मे सहायता करता है।

(XII) अन्त मे भ्रमण एवं अवलोकन का विवरण, सफलताये, असफलताये विद्यार्थियो के अनुभव इत्यादि की रिपोर्ट तैयार करवाकर प्रकाशित कर लेनी चाहिए।

(XIII) भ्रमण एवं अवलोकन की समाप्ति पर शिक्षक की यह जिम्मेदारी है कि सभी विद्यार्थी अपने घर सुरक्षित पहुंचे या नही। साथ ही जो भी सामान गया था उसे गिनती कर उचित स्थान पर पहुंचाना जरूरी है

निष्कर्ष - इस प्रकार से हम कह सकते है कि क्षेत्र भ्रमण एवं अवलोकन मे शिक्षको की भूमिका महत्वपूर्ण है। शिक्षक विद्यार्थियो को अपने दिशानिर्देश के अन्तर्गत महत्वपूर्ण बातो की जानकारी प्रदान कर सकते है। तथा विद्यार्थियो के ज्ञान मे वृद्धि करा सकते है

Scanned by CamScanner